Indian J. Soc. & Pol. 08 (01) : 105-106 : 2021 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 January 2021 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

पाकिस्तान का मतलब क्या? लोकहित की चेतना

सत्य प्रकाश मौर्य[1], शीला सिन्हा[2]
[1]शोधार्थी, हिन्दी विभाग, वी0एस0एस0डी0 कालेज, कानपुर, उ0प्र0,भारत
[2]शोध निर्देशिका, पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग , वी0एस0एस0डी0 कालेज, कानपुर,उ0प्र0,भारत

ABSTRACT

यात्रा–वृत्तांत अपने मूल रूप में आरम्भिक गद्य का एक अपेक्षया प्रचलित माध्यम रहा है। जिस प्रकार जीवनी और आत्मकथा एक बिन्दु पर इतिहास को स्पर्श करते हैं। उसी प्रकार यात्रा–वृत्तांत का एक पक्ष भूगोल के आकर्षण से जुड़ा हुआ है। यात्रा–वृत्तांत के भीतर देश–दर्शन की जिज्ञासा' केन्द्रीय वृत्ति रहती है और साथ ही साथ प्रकृति की वादियों का मनोहर दृश्य और एक ओर साहसिक जिज्ञाषाएं होती है। यह विराट् मानवीय विकास का अनुशासित सिंबल है। इस दृष्टि से यात्रा–वृत्तांत लेखक और पाठक दोनों के लिए आदिम प्रतीक या पुराण–कथा की भाँति बार–बार अपने को खोलता चलता है। असगर वजाहत ने 'यात्रा–वृत्तांत' पाकिस्तान का मतलब क्या? में लोकहित की चेतना की अभिव्यक्ति की है। आज पाकिस्तान के बारे में जानने और समझने का मतलब अपनी पड़ताल करने जैसा है।

KEYWORDS: हिन्दी साहित्य, यात्रा बृत्तान्त, गद्य साहित्य

आरम्भिक अवस्था में यात्रा–वृत्तांत स्वभावतः परिचयात्मक और स्थूल वर्णन प्रधान थे। सूक्ष्मता का अभाव था । वस्तुगत वर्णन ही अधिकतर हुआ करता था। विदेश की यात्रा करने वाला यात्री पानी के जहाज का वर्णन कुछ इस प्रकार करता था, मानो किसी विशाल राज प्रासाद की खबर प्रस्तुत कर रहें हों। उनका वर्णन प्रायः प्रभावहीन और स्थूल था। उसमें बालकों जैसी उल्लास, हर्ष और उत्साह रूपी चेष्टाएँ प्राथमिकता पाती थीं। कुल मिलाकर यदि कहा जाय तो उनकी दृष्ट स्थूल वर्णन में अधिक लगती थी जिस कारण अंतरंग प्रायः उपेक्षित और विस्मृत होता था। किन्तु कालांतर में यात्रा–वृत्तांत आकारों, आकृतियों और अंतरंग का एक उत्तरोत्तर बेहतर अनुपात खोजने में संलग्न रहा है, भाषा को सर्जनात्मक और संवेदना को सूक्ष्मतर बनाते हुए। असगर वजाहत का 'पाकिस्तान का मतलब क्या'? ऐसी ही कृति है।

सरल भाषा और आत्मीय शैली के चलते कईयों ने इसे खूब सराहा। इनको लेखक इस क्षेत्र में अधिक प्रभावी रहा। अन्य क्षेत्रों के बजाय इन्होंने इस विषय का मोह और महत्व अधिक दिया। यात्रा–वृत्तांत के संदर्भ में रामस्वरूप चतुर्वेदी लिखते है– ''जीवन–चरित जैसे चरित के आगे जीवन–चरित का ही एक खंड है– वृत्त से आगे यात्रानुभूति में प्रवेश करता है। यह सम्भव होता है कौतुहल से उपराम होकर भाषा–संवेदना की सक्रियता में।''(चतुर्वेदी,2008,पृ0172) विदेश यात्रा प्रायः वृत्तों का आधार बनाती थी। 'पाकिस्तान का मतलब क्या? पाकिस्तान के सभी पहलुओं पर रोशनी डालती यह किताब निर्मम दिखती है तो कहीं आत्मीयता से भरपूर। पाकिस्तान की सत्ता, सेना प्रशासन और सामाजिक परिदृश्य के माध्यम से एक दर्द को भी बयां किया है जहाँ धर्म, भाषा और प्रान्तीयता के आधार पर हर साल न जाने कितना नर–संहार होता रहा है।''(वजाहत,2018)

असगर वजाहत प्रस्तुत यात्रा–वृत्तांत में लोकहित की चेतना को अभिव्यक्ति देते हैं। यह रचना आज सोचने की दिशा देती है कि पाकिस्तान की तरफ देखने का नजरिया बदलना चाहिए। पाकिस्तान न केवल महत्वपूर्ण पड़ोसी और बहुत बड़ा बाजार है बल्कि एक मजबूत सांस्कृतिक कड़ी भी है जो हमारे वर्तमान और भविष्य को समझने के लिए अनिवार्य है। मानवीय संवेदना के धरातल पर यात्रा– वृत्तांत आगे बढ़ता जाता है। इस लिए देश दर्शन लोकहित की चेतना निर्माण में महत्वपूर्ण रहती है।

रामस्वरूप चतुर्वेदी लिखते हैं कि– ''देश दर्शन यात्रा–संस्मरण की मूल वृत्ति है, जिसमें एक ओर प्रकृति की पुकार है, दूसरी और साहसिक जिज्ञासा। यात्रा मानो विराट् मानवीय विकास का एक सीमित प्रतीक है।''(चतुर्वेदी,2011पृ0166) इस यात्रा–संस्मरण में पाकिस्तान में अल्पसंख्यक समुदाय की तलाश करने की भी कोशिश है।

भूगोल के अतिरिक्त समाज, इतिहास और संस्कृति की तह तक इन वृत्तों में उनकी निगाह पहुँचती है।पाकिस्तान के हिन्दू, ईसाई अहमदिया समुदायों की स्थिति पर भी लेखक ने ध्यान दिया है। विभाजन की त्रासदी को समझने का प्रयास किया है।

हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार– ''सौन्दर्य की दृष्टि से उल्लास की भावना से प्रेरित होकर यात्रा करने वाला यायावार एक प्रकार से साहित्यिक मनोवृत्ति के माने जा सकते है और उनकी मुक्त अभिव्यक्ति को यात्रा–साहित्य कहा जा सकता है।''(वर्मा, 1963, पृ263) असगर वजाहत के यात्रा–वृत्तांत में उक्त दृश्य अभिव्यंजित है। लोक हित की चेतना की गुंजार, कृति में बराबर सुनाई देती है। समता, स्वतंत्रता एवं विश्व बन्धुत्व की भावना से प्रेरित लेखक लिखता है– ''आधी रात के वक्त, मुल्तान के मंगोल, होटल के कमरा नं0 113 में मैं यह सोचने लगा कि यहाँ जीवन कितना सस्ता है। धर्मान्धता चाहे वह जिस धर्म की कहाँ ले जाती है? मुझे बाबरी मस्जिद ध्वंस और गुजरात का नरसंहार याद आने लगा।''(वजाहत, 2018, पृ031)

1: Corresponding Author

इस प्रकार धर्मान्धता से मानवीयता कुत्सित हो रही है। लेखक अपनी यात्रा के दौरान अपने अनुभवों को इसमें व्यक्त किया। पंडित उमेश शास्त्री राय का कहना है कि – ''मानव जीवन के द्वारा भोगे हुए यात्राओं के अनुभवों को कलात्मक रूप से प्रस्तुत करना। यात्रा–वृत्त में कल्पना की अपेक्षा यथार्थ का चित्रण होता है, पात्रों की सृष्टि नहीं होती, अपितु भोगे हुए यथार्थ में जिन व्यक्तियों की अमिट छाप रहती है। उनका चित्रण स्वतः ही होता है। यात्रा–वृत्त में यथार्थ का यथावत चित्रण रहता है'' लेखक लोककल्याण की भावना के निर्मित अपनी यात्रा का क्रम जारी रखता है वह जहाँ भी जाता है वहाँ की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक गतिविधियों का अनुभव करते हुए अपने लेखन में व्यक्त करता है। असगर भी ऐसा करते है। उनकी भी लोक चिन्ता साहित्य जगत में स्थापित है।

लेखक लिखता है कि– ''इस्लाम के नाम पर जिस देश में इतनी घृणा और हिंसा फैलायी जा रही है, 'मनुष्यता' का विभाजन किया जा रहा है, उसका नतीजा बहुत ही भयानक होगा।''(वही, पृ066)

लेखक जनता में सरकार की उन सारी कमजोरियों को उजागर कर सचेत करना चाहता है। सरकार की गारंटी क्या है? यह सवाल उठाया गया है। भारत की सरकारी तंत्र की विसंगतियों का चित्रण कुछ इस प्रकार करता है–''आज भारत में कम से कम पाँच राज्यों के राज्यपाल भूतपूर्व लेफ्टीनेन्ट जनरल या आई0पी0एस0 सर्विस के ऊँचे अधिकारी जैसे– रिटायर्ड डायरेक्टर जनरल, बार्डर सेक्युरिटी फोर्स, डायरेक्टर आई0बी0 वगैरह हैं। मतलब भारतीय लोकतंत्र में आज नौकरशाही और सेना को शासन में जो हिस्सा मिल रहा हैं, वह पहले नहीं था। पहले शासन में सिविल सोसायटी को भी कुछ हिस्सा मिल जाता था लेकिन पिछले कई दशकों से यह बन्द हो गया है। आज भारतीय राजनेताओं को सेना, पुलिस, आई0ए0एस0 अधिकारियों की मदद चाहिए। सिविल सोसायटी का सहयोग नहीं। शायद यही वजह है कि भारतीय सुरक्षा बलों के उच्चाधिकारियों के भ्रष्टाचार के जो मामले सामने आ रहे हैं उतने पहले कभी नहीं आते थे। यात्रा–वृत्तांत में लेखक पाकिस्तान के प्रत्येक क्षेत्र के किसानों, मजदूरों, स्त्रियों एवं दलितों की दशाओं का वर्णन किया है। उनके प्रति लेखक की सहानुभूति भी है। लेखक की संवेदना उन बधुआ मजदूरों पर भी है जो आज उत्पादन के साधन–ट्रैक्टर और ट्यूबवेल आ जाने के बाद भी अभी मुक्त नहीं हो पाये। लेखक लिखता है– 'ट्रैक्टर और ट्यूबवेल आ जाने के बाद भी जमींदार और खेत जोतने वालों के बीच वही शताब्दियों पुराना रिश्ता है।''(वही पृ086)

ऐसी समाज व्यवस्था में बधुआ मजदूर आज भी हैं। ''1992 में बधुआ मजदूरी को गैर कानूनी करार देने वाले कानून को जमींदार 1952 के टेनेन्सी एक्ट के आधार पर खारिज करते है। अदालतों ने इस आधार पर बधुआ मजदूरों को बधुआ मानने से इंकार कर दिया है।''(वही,पृ086) डॉ0 रामचंद्र तिवारी लिखते हैं– ''यात्रा–वृत्तों में हम दृश्यों, स्थितियों व्यक्तियों और आधुनिक तकनीकी ज्ञान के बल पर निर्मित विविध विस्मयकारी परिदृश्यों तथा इनके प्रति लेखक की अनुकूल–प्रतिक्रियाओं के साथ–साथ परिचित होते चलते है। लेखक की रूचि, संस्कार, मानसिकता और संवेदनशीलता के अनुसार यात्रा–वृत्तों के बदलते रूपाकार हमारी राग– चेतना को निरंतर उद्वैलित करते चलते है। यात्रा–वृत्तांत लेखक के साथ सह–यात्रा का सुख अनुभव करते हुए हम अपनी जिज्ञासा तुष्टि तो करते ही हैं, उसकी आत्मा का साक्षात्कार भी करते हैं''(तिवारी,2012,पृ086)

यात्रावृत्तों में देश–विदेश की सांस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, परिवेशों का चित्रण सुन्दर ढंग से किया है। यात्रा–वृत्तांत एक जीवन–दर्शन भी है। लेखक जिस देश या जगहों का यात्रा करता है। वहाँ की संस्कृति का सम्पादन उनकी रचनाओं में महसूस होता है। यायावरी वृत्त लेखक की जीवन वायु है। साहित्यिक यायावारी से सृजनात्मकता का विकास होता है। यात्रा–वृत्तांत लेखक के समग्र जीवनानुभव का जीवंत दस्तावेज होता है।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन लिखते हैं कि ''यात्रा ने ही मेरे हाथ में जबरदस्ती कलम पकड़ा दी और स्वयं ही लेखन शैली बनती गई। कलम के दरवाजे को खोलने का काम मेरे लिए यात्राओं ने ही किया इसलिए मैं इनका बहुत कृतज्ञ हूँ।''(संगीता, 2016,पृ026)

डॉ0 इरेश स्वामी का कहना है कि –यात्रा–साहित्य एक ऐसा काँच है। जिसके मध्य हम लेखक के व्यक्तित्व को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं और उसके द्वारा अनुभूत घटनाओं को अनुभव करते जाते हैं।''(वही, पृ012)

यात्रा–वृत्तांत में लेखक सिंध के कुछ सामंतों द्वारा किस प्रकार सामान्य जनता का शोषण किया जाता है, उसका बाकायदा जिक्र किया है। भू–स्वामियों के सामंती चरित्र को उकेरा है ''यह भू–स्वामी गाँव, इलाके, कस्बे और शहरों को पूरी तरह कंट्रोल करते हैं, क्योंकि वही राजनीति में है और सरकारें भी वही बनाते हैं।''(वजाहत, 2018,पृ086)

REFERENCES

वजाहत, असगर (2018) *पाकिस्तान का मतलब क्या?,* नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ,

चतुर्वेदी, रामस्वरूप (2008) *हिन्दी गद्यः विन्यास और विकास,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन

चतुर्वेदी, रामस्वरूप (2011) *हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन

वर्मा, धीरेन्द्र (1963) *हिन्दी साहित्य कोश,* खण्ड–2 वाराणसी, ज्ञानमडल प्रकाशन

डॉ0 संगीता (2016) *संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिन्दी यात्रावृत्त,* कानपुर, अमन प्रकाशन